स्वतन्त्रता दिवस पर भारत के प्रधान मन्त्री

श्री जवाहरलाल नेहरू का

PM/IS 30008 Cnd III

भाषण

दिनांक: 15/8/1947

भाइयों और बहिनों,

आज एक शुभ और मुबारक दिन है । जो स्वप्न हमने बरसों से देखा था वह कुछ हमारे आंखों के सामने आ गया। यह चीज हमारे कब्जे में आयी । दिल हमारा खुश होता है, एक मंजिल पर हम पहुँचे । यह हम जानते हैं कि हमारा सफर खत्म नहीं हुआ, अभी बहुत मंजिलें बाकी हैं । लेकिन फिर भी एक बड़ी मंजिल हमने पार की और यह बात तय हो गई कि हिन्दुस्तान के ऊपर कोई गैर हुकूमत अब नहीं रहेगी । आज हम एक आजाद लोग हैं, आजाद मुल्क हैं ।

मैं आपसे आज जो बोल रहा हूँ एक हैसियत , एक सरकारी हैसियत मुझे मिली है जिसका असली नाम यह होना चाहिए कि – मैं हिन्दुस्तान की जनता का प्रथम सेवक हूँ । इस हैसियत से मैं बोल रहा हूँ , वह है सयत मुझे किसी सख्श ने नहीं दी, बाहरी लेकिन आपने दी और जब तक आपका भरोसा मेरे ऊपर है, मैं इस हैसियत पर रहूँगा और उस खिदमत को करूँगा ।

हमारा मुल्क आजाद हुआ सियासी तौर पर एक बोझा जो बाहरी हुकूमत का था वो हटा । लेकिन आजादी भी अजीब-अजीब जिम्मेदारियां लाती हैं और बोझे लाती है । अब उन जिम्मेदारियों का सामना हमें करना है और एक आजाद हैसियत से हमें आगे बढ़ना है और अपने बड़े-बड़े सवालों को हल करना है । सवाल बहुत बड़े हैं । सवाल हमारी सारी जनता के उद्धार करने के हैं, सवाल हैं गरीबी को दूर करना, बीमारी को दूर करना और आप जानते हैं कितनी और मुसीबतें हैं जिनको हमें दूर करना है ।

..... 2/-

आजादी महज एक सियासी चीज नहीं है । आजादी जभी एक ठीक पोशाक पहनती है जब उससे जनता को फायदा हो । आज कल हमारे सामने यह आर्थिक और इकतसादी सवाल बहुत सारे हैं, बहुत काफी जमा हुए हैं इस हमारे गुलामी के जमाने में । बहुत कुछ इस लड़ाई की वजह से , बड़ी लड़ाई जो हुई हैं दुनिया में और उसके बाद जो हालत दुनिया में है उसकी वजह से यह सवाल जमा हैं । खाने की कमी है, कपड़े की कमी है और जरूरी चीजों की कमी है और ऊपर से चीजों के दाम बढ़ते जाते हैं । जिससे जनता की मुसीबतें बढ़ रही हैं । हम कोई इन सब बातों को जादू से तो दूर नहीं कर सकते । लेकिन फिर भी हमारा पहला फर्ज है कि इन-इन सवालों को लेकर जनता में आराम पहुँचाएं और पूरी तौर से इन सवालों को हल करने की भी कोशिश करें । लेकिन इसके पहले एक और है सवाल और वह यह है कि सारे हमारे देश में अमन हो, शान्ति हो, आपस के लड़ाई-झगड़े बिलकुल बन्द हों, क्योंकि जब तक लड़ाई-झगड़े होते हैं उस वक्त तक कोई काम माकूल तरीके से नहीं हो सकता ।

तो यह पहली मेरी आपसे रखवास्त है फिर जो हमारी नई गवर्नमेंट बनी है उसमें भी आज यह पहली दरखवास्त हिन्दुस्तान से की है । जो आप शायद कल सुबह के अखबारों में पढ़ेंगे वह यह है कि फौरन यह जो आपस की ताइत्तेफाकी, आपस के झगड़े हैं, वह बन्द किए जाएं । क्योंकि आखिर अगर नाइत्तफाकी है भी तो किस तरह से वह हल होगी इन झगड़ों से और मारपीट से । आपने देख लिया कि एक जगह झगड़ा होता है, दूसरी जगह उसका बदला होता है । उसका कोई अन्त नहीं है और यह बातें कुछ आजाद लोगों को जेब नहीं देती हैं । ये गुलामी की बातें हैं, हमने कहा कि हम प्रजातन्त्रवाद इस देश में चाहते हैं । प्रजातन्त्र में फिर डैमोक्रेसी में फिर इस तरह की बातें नहीं होती । हमें जो सवाल हों आपस में सलाह मशवरा करके, एक दूसरे के का ख्याल कर के उनको हल करना है, और उन पर अमल करना है अपने फैसले पर । इसलिए पहली बात तो यही है

..... 3/-

कि हमें फौरन अपने सारे किस्म के झगड़े बन्द करने हैं]। फिर फौरन ही हमें वह बड़े आर्थिक सवाल उठाने हैं जिनका अभी मैंने आपसे जिक्र किया । हमारी जमीन बहुत सारे प्रान्तों में जो जमीन का कानून है आप जानते हैं वह कितना पुराना है कितना उसका बो बोझा हमारे किसानों पर रहा है और इसलिए अरसे से हम उसको बदलने की कोशिश कर रहे हैं और यह जो जमींदारी प्रथा है, उसको भी हटाने की कोशिश कर रहे हैं । उसकी भी जल्दी हमें करना है । और फिर सारे देश में बहुत कुछ आर्थिक तरक्की करनी है, कारखाने खोलने हैं, घरेलू धन्धे बढ़ाने हैं जिससे देश की धन-दौलत बढ़े और और बढ़े इस तरह से नहीं कि थोड़े से जेबों में जाए, बल्कि आम जनता का उससे फायदा हो । आप शायद जानते हों कि हमारे बड़े-बडे, स्कीम हैं, बड़े बड़े नक्शे हैं हिन्दुस्तान में बहुत सारी कि जो नदियां हैं जो दरिया हैं उनके पानी की ताकत से फायदा उठा कर हम नई-नई ताकतें पैदा करें, बड़ी-बड़ी नहरें बनाएं और बिजली पैदा करें जिस ताकत से फिर हम और बहुत काम कर सकेंगे । इन सब बातों को हमें चलाना है, तेजी से चलाना है क्योंकि आखिर में देश की धन दौलत इसी से बढ़ेगी और उसके बाद जनता का उद्धार होगा ।

बहुत सारी बातें मुझे आपसे कहनी हैं और बहुत सारी बातें मैं आपसे कहूँगा लेकिन आज सिर्फ दो चार बातें मैं आपके सामने रखा चाहता हूँ ।

मैं आशा करता हूँ कि मुझे आइन्दा मौके होंगे कि आपसे ज्यों ज्यों हम काम कर रहे हैं ज्यों ज्यों हमारे दिमाग में वह मैं पेश करूँ, क्योंकि प्रजातन्त्रवाद हमें हमेशा जनता को मालूम होना चाहिए कि क्या हम करते हैं, क्या हम सोचते हैं उसको पसन्द करना चाहिए । इसलिए यह जरूरी है कि आपसे हमारा सम्बन्ध बहुत करीब का रहे ।

.... 4/-

आज मैं अधिक नहीं कहना चाहता, लेकिन यह मैं जरूर चाहता था कि आज एक शुभ दिन कुछ नकुछ आपस मैं कहूँ । कुछ न कुछ आपसे एक सम्बंध पुराना सम्बंध ताजा करूँ । इसलिए मैं आज आपके सामने हाजिर हुआ । फिर से मैं आपको इस शुभ दिन की मुबारकबाद देता हूँ । लेकिन उसी के साथ आपको याद दिलाता हूँ कि हमारी जिम्मेदारियां जो हैं इसके मानें हैं कि हमें आइन्दा आराम नहीं करना है बल्कि मेहनत करनी है ।काम करना है । एक दूसरे के सहयोग के साथ, तभी हम अपने बड़े सवालों को हल कर सकेंगे ।

जयहिन्द ।